Date-22-05-2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640
Class - B.A. II (Hons.)

Topic - Symbolic Logic

Scanned with CamScanner

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र (Symbolic Logic)

तर्कशास्त्र की वह पद्धति, जिसमें किसी युक्ति की यथार्थता के साथ प्रतिपादित करने के लिए एक प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है, प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र (Symbolic Logic) कहा जाता है। किसी युक्ति का विश्लेषण और मूल्यांकन प्राय: जटिल विशिष्टताओं और जटिलताओं के कारण कठिन हो जाता है। युक्ति में प्रयुक्त शब्द अस्पष्ट या अनेकार्थक हो सकते हैं, युक्ति की रचना अस्पष्ट हो सकती है, रूपक या मुहावरे युक्ति के अर्थ को भ्रामक बना सकते हैं। इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए तर्कशास्त्रियों ने भाषा-विषयक विकारों से मुक्त एक कृत्रिम प्रतीकात्मक भाषा का निर्माण किया है, जिसके द्वारा किसी भी युक्ति को उसकी यथार्थता के साथ प्रतिपादित किया जा सकता है। प्रतीक, युक्ति के बारे में हमारे विचारों की भी सहायता करते हैं तथा कुछ बौद्धिक कार्यों को निष्पादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्राचीन तथा शास्त्रीय तर्कशास्त्रियों ने भी प्रतीकों के प्रयोग विशेष महत्व को स्वीकार किया है। अरस्तू ने अपने विश्लेषणों में चरों (Variables) का प्रयोग किया है तथा अपने तर्कशास्त्र में प्रतीकों को एक विशेष क्रम में व्यवस्थित करके उसका प्रयोग किया है। आधुनिक तर्कशास्त्र में प्रत्येक निगमनात्मक युक्ति के हातकों के बीच न्यायवाक्यों का उपयोगी होना आवश्यक है। तर्कवाक्य तथा युक्तियों की आन्तरिक संरचना आधुनिक तर्कशास्त्र का केन्द्रबिन्दु है।

इस संरचना को समझने के लिए विशेष प्रतीकों के प्रयोग और विश्लेषण में पारंगत होना आवश्यक माना गया है। किसी निगमनात्मक युक्ति को प्रतीकों द्वारा न्यायवाक्य आकार में रूपान्तरित करके निगमनात्मक विश्लेषण की प्रक्रिया के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। आधुनिक तर्कशास्त्र में संकेतिक प्रतीक चिह्न, किसी न्याय युक्ति के विश्लेषण के लिए सर्वाधिक सशक्त साधन है, क्योंकि इन वैध तर्कों और अवैध तर्कों के रूप का विश्लेषण सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner